व्यंग्य …..

कहानियाँ मर चुकी हैं!

सुधीर ओखदे

सम्पर्क - "अव्यान"

गट क्रमांक 561/2D/1/2 प्लॉट क्रमांक 51

अनुराग स्टेट बैंक कॉलनी ,पवन हिल्स ,

जलगाँव(महाराष्ट्र)425002

सेल -9867537659

ईमेल -ssokhade@gmail.com

जिनका सेवाकाल, मेवाकाल होता है वह निवृत्ति काल में अधिक विचलित रहते हैं । निवृत्ति वैराग्य का संकेत हो सकता है पर जो मानव गृहस्थ और वानप्रस्थ को निवृत्ति काल में बदल रहा हो उसे बैरागी बनते-बनते भी कुछ समय तो लगेगा न!

थानेदार जी ने अपने सेवाकाल में कभी गृहस्थी की तरफ ध्यान ही न दिया । शादी के बाद प्रतिदिन पत्नी को हफ्ते की आदत लगा दी सो वह थानेदार की कम और हफ्ते की अधिक प्रतीक्षा करने लगी ।

थानेदार जी का हफ्ता चलायमान रहा। घर के साथ-साथ ससुराल को भी समृद्धि प्रदान करता रहा। सिक्के की चमक के आगे पत्नी के चेहरे की चमक की तरफ कभी ध्यान ही न गया, बाकी चमकते चेहरों की इच्छा वह बाजार में पूरी कर लेते थे। थानेदारी पैतरे भला पत्नी कैसे झेल पाएगी?

सर्म्पक नहीं था सो स्नेह नही था। स्नेह नहीं था सो भावना नहीं थी। भावना नहीं थी सो संवेदना नहीं थी। अब ऐसा व्यक्ति जो न अब हफ्ता दे सकता हो, न स्नेह भला उसकी घर में क्या औक़ात ? सो थानेदार जी ने दुखी मन से गाँव का चबूतरा चुन लिया है। नीम के पेड़ के नीचे चबूतरे पर बैठे-बैठे अपने सेवाकाल को स्मरण कर आज भी उनकी आँखों में गुलाबी डोरे तैर जाते हैं।

- साहेब जी रिपोर्ट करानी है।

- कराओ !

- वह क्या बात है कि.....

- अबे मिमिया काहे रहा है। साले थानें में रिपोर्ट कराने आया है कि मंदिर में ?

- साहब बात यह हे कि हमे बड़ा डर लग रहा है।

- "हमें"! साले चेहरे से फटीचर लगता है और अपने आप को 'हमे' कहता है। जानता नहीं कि 'हम' तस्कर गुंडे-मवाली, पुलिस और राजनेता लोग अपने लिए इस्तेमला करते हैं।

सरकार 'हम' का वह मलतब नहीं है जो आप लगा रहे हैं। 'हम' में हमारी जोरू भी शामिल हैं।

थानेदार की निगाहें चौकन्नी हो गई। 'गरीब की जोरू सबकी भाभी' वाली कहावत पर उन्हें कतई विश्वास नहीं था। वह तो 'गरीब की जोरू अपनी भी जोरू' वाली कहावत पर विश्वास करते थे। उन्होंने देखा गरीबी में लिपटी तीखे नैननक्श वाली एक नवयौवना गर्दन झुकाए नीचे बैठी है।

साली को नहला धुलाकर अच्छे कपड़े पहना दें तो एस.पी. साहब की बीबी को मात करेगी।

एस.पी. साहेब की बीबी का ख्याल आते ही उनके चेहरे पर बेबसी छा गई। वह धीरे से उठे और उस गरीब की जोरू से सांत्वना से पेश आने लगे।

गरीब का महत्व अचानक बढ़ गया। उसे कुर्सी पर बिठाया। उसके निवेदन को लिपिबद्ध किया गया। उसे आश्वासन दिया गया। इधर गरीब का विश्वास अचानक सरकार पर होने लगा। उसे थानेदार देवता से लगने लगे। एक साल बाद देवता का प्रसाद घर में खेलने लगा।

थानेदार ने हिसाब लगाकर देखा और सोचा बिरजू अब बीस के आसपास का हो गया होगा। और वासंती..... उनकी आँखों में फिर गुलाबी डोरे तैरने लगे।

बच्चों को कौन सी कहानियाँ सुनाएँ यह ख्याल मन में आते ही वे फिर विचलित हो उठे। ऐसी कहानियाँ.....छी! छी! पर मेरे खाते में तो ऐसी ही कहानियाँ हैं।

पत्नी से पूछा तो वह बोली, "अब मैं क्या बोलूं जी! सारी जिंदगी यहाँ-वहाँ से तुम्हारी कहानियाँ सुनती रही। तुम्हारी इतनी कहानियाँ सुनी हैं कि मेरी जिंदगी ही एक कहानी बनकर रह गई है। आज मुझसे मुँह खोलकर पूछा है तो कहती हूँ, तुम्हारी कहानियाँ किसी भी सभ्य समाज के निर्माण में सहायक नहीं हो सकतीं। बच्चों को भूल कर भी अपनी कहानियाँ मत सुनाना। तुम्हारे स्वयं के बच्चों को भी मैने तुम्हारी कहानियों की भनक नहीं लगने दी। फिर दूसरों के बच्चों को गुमराह करने का हमें क्या अधिकार है।"

थानेदार स्तब्ध रह गए। पत्नी मुँह में पल्लू दबाती सिसकते-सिसकते अंदर चली गई।

उन तीनों मित्रों के लिए गाँव वालों ने यह तय किया था कि रोज चबूतरे पर बैठकर गाँव के बच्चों को वे कहानियाँ सुनाएँ। अपनी सेवाकाल की कहानियाँ।

ये तीनों निवृत्ति के बाद जब अपने पुश्तैनी घरों मे रहने आए तो उनके सामने समस्या थी कि समय कैसे व्यतीत किया जाए। तीनों उच्च पदों से निवृत्त हुए थे। एक थानेदार, एक सरकारी वकील और एक न्यायाधीश।

गाँव के लोगों ने यह कहकर उनकी समस्या का समाधान कर दिया कि ये हमारे लिए गौरव की बात है कि आप जैसे उच्च अधिकारी सेवा निवृत्त होकर फिर अपनी धरती पर लौट आए हैं। आप तो बस गाँव के बच्चों को अपने-अपने सेवा काल की कहानियाँ सुनाइए ताकि उनसे प्रेरणा लेकर ये बच्चे भी कुछ बन सकें।

प्रेरणा शब्द को स्मरण कर थानेदार जी लज्जित हो उठे। कौन-सी कहानी सुनाएँ उनके पास तो सभी 'केवल वयस्कों के लिए' 'अ' श्रेणी वाली ही कहानियाँ हैं।

वकील साहेब ने दो कहानियाँ बच्चों के लिए चुन ली हैं,वे अपनी पत्नी से इस संबंध में चर्चा करना चाहते हैं। पत्नी से चर्चा किये बिना तो उन्होंने अपने जीवन में कोई केस भी नहीं लड़ा था। उन्होंने एक बार किचन की तरफ निगाह दौड़ाई, पत्नी को आते देखकर उन्होंने नि:श्वास छोड़ा।

- क्या बात है! तुम तो मेरी ऐसी प्रतीक्षा कर रह हो जैसे अपने सेवाकाल में मुकदमों पर चर्चा करने के लिए किया करते थे।

- सच कहा तुमने! आज भी कुछ ऐसे ही विषय पर तुम्हारी प्रतीक्षा कर रहा था।

- क्या बात है। निवृत्ति रास नहीं आ रही है क्या ? फिर चलना है शहर में? कोई मुकदमा मिल गया है क्या ?

- ओफ डार्लिंग! तुम्हारी मजाक करने की आदत कब छूटेगी!

- बोल क्या बात है ?

- गाँव वालों ने हम तीनों मित्रों पर एक जिम्मेदारी डाली है कि हम रोज यहाँ के बच्चों को अपने सेवाकाल की कहानियाँ सुनवाएँ ताकि वे उन कहानियों से प्रेरणा लेकर कुछ बन सकें।

- तुम्हारे सेवाकाल की कहानी! पागल हो गए हो क्या! उन गुनाहों को फिर याद करना चाहते हो जिनसे भागकर यहाँ गाँव में शरणी ली है। कहानी मनोरंजन के लिए नहीं होती, प्रेरणा के लिए होती हैं। सीख लेने के लिए होती हैं। तुम्हारा पेशा ही ऐसा था जहाँ रोज एक नई कहानी जन्म लेती थी। लेकिन सब कहानियाँ सुनाई नहीं जाती। तुम्हारे खाते में भ्रष्टाचार, अन्याय, अत्याचार के अलावा है क्या जो इन बच्चों में बाटोगे?

- तुम तो बस! क्यों वह मुकदमा याद नहीं है जब मैंने टेक्सटाइल किंग मित्तल साहब के हत्यारे को सजा दिलवाई थी। उस मुकदमे को ही कल सुनाता हूँ।

- हाँ! वह मुकदमा मुझे याद है। उस घर के नौकर रामू को उम्र कैद की सजा। मालिकिन के लिए नौकर व्दारा किया गया एक त्याग। सलाह देने वाले तुम। हमें मिले थे एक मुश्त दस लाख रुपये। उस रामू की अबोध बच्ची का चेहरा तो अभी तक मेरी आँखों के सामने दौड़ता है जिसे कैंसर था और सम्पूर्ण इलाज की जिम्मेमदारी मिसेज मित्तल ने ली थी। शायद अपनी बेटी के जीवन के लिए उस गरीब ने इतना बड़ा बलिदान किया था। मर गई थी न बेचारी कुछ महीनों बाद ही! हाँ! हम लोग मिसेज मित्तल की दूसरी शादी की पार्टी में धुत थे, शायद तब की बात है।

- अब तुम तो.....

- कहानियाँ परियों की, राजारानी की, भूत प्रेत की, देशभक्ति की, उपदेशों की होती हैं। सेवाकाल की कहानियाँ सुनाने का साहस तो आज किसी में भी नहीं है न देश के मंत्रियों में, न सेना के अधिकारियों में, न स्कूल के शिक्षकों में, न पत्रकारों में, न डॉक्टरों में।फिर तुम्हारा तो पेशा ही ऐसा था कि उसमें से कितना भी छानने का प्रयत्न किया जाए स्वस्थ कहानी निकल ही नहीं सकती। काश कानून की आँखो पर पट्टी नहीं होती तो शायद तुम्हारी भी कहानियाँ बच्चों को लुभा पातीं। सो जाओ।

इधर जज साहब की नींद भी उड़ी हुई थी। पत्नी ने पूछा, "क्या बात है। इधर आप, खोए-खोए से रहते हैं।

- नहीं तो ऐसी कोई बात नहीं है।

- आप नहीं बताना चाहते तो न सही, लेकिन मैं जानती हूँ कि इधर आप सोचने लगे है। जज जैसा व्यवसाय आपने बिना सोचे कर लिया। कभी आपको मैंने इतना विचलित नही देखा। कैसा भी निर्णय हो कितना भी संवेदनशील मामला हो, मैंने आपको चट्टान की तरह देखा है। पर इधर आप रात-बेरात उठकर बैठ जाते हैं। कमरे में घंटो चक्कर लगाया कराते हैं।

- नहीं ऐसी कोई बात नहीं है। तुम सो जाओ। मैं तो ऐसे ही.....

- क्या ऐसे ही! निर्मला का मुकदमा आज भी याद है मुझे। उसके ससुराल वालों ने कितना जुल्म किया था उस पर। लेकिन आपने सारे ससुराल वालों को संदेह का लाभ देते हुए खुला छोड़ दिया और निर्मला को उनके साथ रहने की सलाह दी। दूसरे दिने निर्मला ने आत्महत्या कर ली तब भी तुम चट्टान की तरह दिखाई दिये थे। ये अचानक तुम्हें क्या हो जाता है! तुम तो संवेदना, भावना को ताक पर रखकर अपने फायदे वाले निर्णय सुनाया करते थे। रोज एक नया निर्णय। रोज एक गलत निर्णय। रोज एक अपराधिक निर्णय। लेकिन तुम कभी विचलित नहीं हुए। अब तुम्हें एकाएक क्या हो गया है ?

- गाँव वाले चाहते हैं कि मैं यहाँ पर बच्चों को अपने सेवाकाल में किये गए निर्णयों की कहानियाँ सुनाऊँ ताकि वे इन कहानियों से प्रेरणा लेकर कुछ बन सकें। मैं ही क्यों मेरे दोनो मित्रों से भी वे उनके सेवाकाल की कहानियाँ सुनना चाहते हैं।

- चुपचाप सो जाओ। तुम तीनों का सेवाकाल इतना घिनौना है कि उसे हम-जैसी पत्नियों में ही बँटना चाहिए। हमें तो उस पीड़ा को अंत समय तक सहना है। भ्रष्ट जीवन ऊपर से सुखी अवश्य दिखाई देता हो पर उसके अंतर में अनंत दु:खों का अंबार लगा होता है जिसे उसके परिवार वाले भोगते हैं। तुम सारे जीवन लम्बी तानकर सोते रहे सो अब भी वही करो। हम लोग हैं तुम्हारे पापाऐं का बोझ ढोने को। सो जाओ।

चबूतरे पर रोज बच्चे जमा होते हैं कहानियाँ सुनने, पर कहानियाँ मर चुकी हैं।